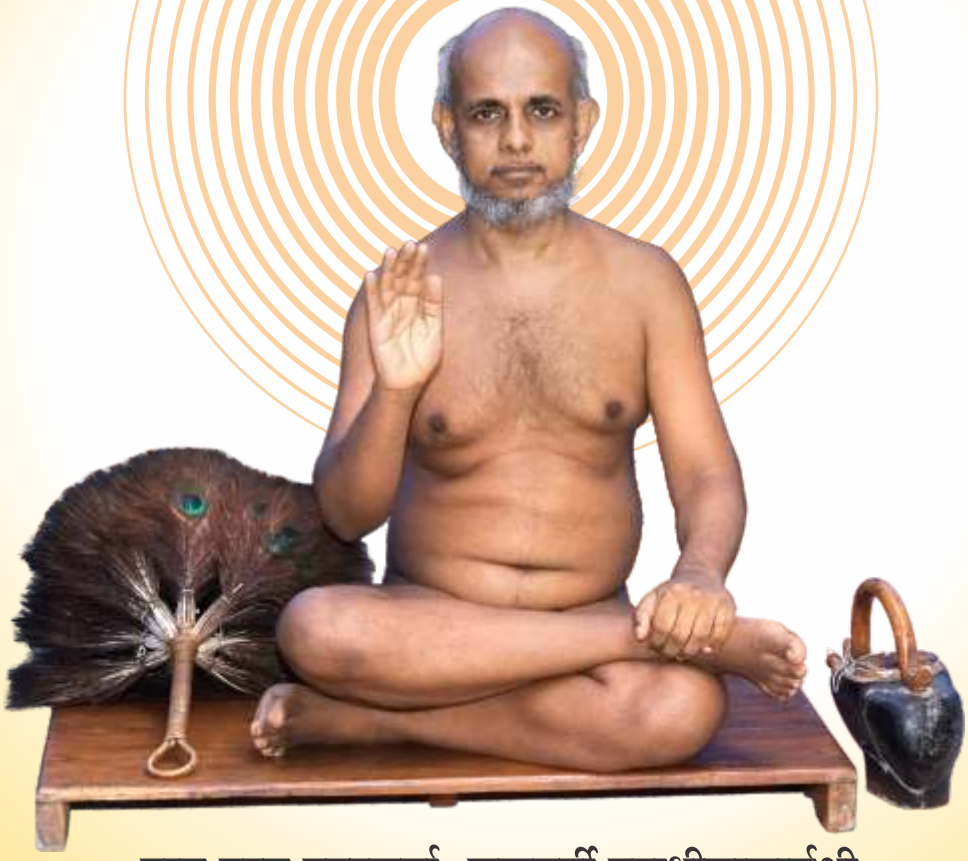

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

मंगल त्रयोदशी (धनतेरस) व्रत पूजा विधान एवं यन्त्र संग्रह

कृतिकार :
परम पूज्य आचार्यश्री
विशदसागर जी महाराज

प्राप्तिस्थान
विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

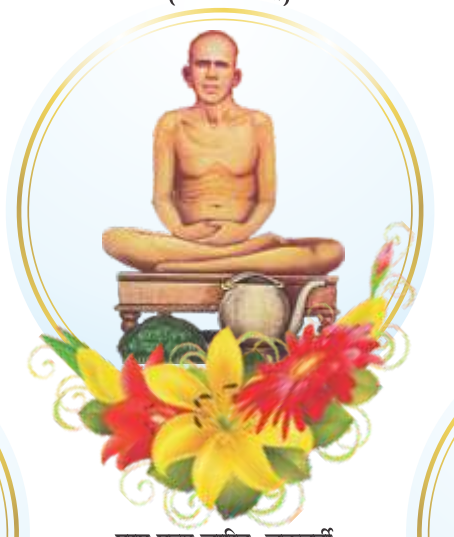

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

मंगल त्रयोदशी (धनतेरस) व्रत पूजा विद्यान

एवं

यन्त्र संग्रह

माण्डना

पुण्यार्जक :

श्रीमति नूतन जैन, अनंत जैन

(सपरिवार)

C-R फार्म, नहटौर, जिला-बिजनौर (उ.प्र.)

मंगल त्रयोदशी (धनतेरस) पूजा

स्थापना

पावन मंगल त्रयोदशी, धनतेरस भी नाम।
व्रताराध्य श्री विमल जिन, का करते गुणगान॥
सुख शांति सौभाग्य प्रद, व्रत यह रहा महान।
हृदय कमल में आज हम, करते जिन आह्वान॥

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र तिष्ठ: तिष्ठ: ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(शम्भू छन्द)

जग में हम भटके सदियों से, न भाव शुद्ध हो पाए हैं।
अब निर्मलता पाकर मन में, जन्मादि नशाने आए हैं॥
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

इच्छाएँ पूर्ण न हो पाईं, मन में संताप बढ़ाए हैं।
अब इच्छाओं की शांती कर, संताप नशाने आए हैं॥
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदन निर्व. स्वाहा।

मन खण्डित मण्डित हुआ सदा, आखिर अखण्ड पद न पाए।
अब इच्छाओं की शांति हेतु, यह पुञ्ज चढ़ाने को आए॥
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताये अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

हम काम बाण से बिद्ध रहे, न भोगों से बच पाए हैं।
अब काम रोग के नाश हेतु, यह पुष्प सुगन्धित लाए हैं॥
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

तृष्णा ने हमें सताया है, न जीत उसे हम पाए हैं।
अब नाश हेतु हम क्षुधा रोग, नैवेद्य चढ़ाने आए हैं॥
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं॥5॥

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य निर्व. स्वाहा।

हम मोह तिमिर से अंध हुए, निज का स्वरूप न लख पाए।
निज ज्ञानदीप की ज्योति जले, यह दीप जलाकर लाए हैं॥
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं॥6॥

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोहाधंकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों के धूम से इस जग के, सारे ही जीव अकुलाए हैं।
अब कर्म नाश करने हेतू, यह धूप जलाने लाए हैं॥
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं॥7॥

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों का फल पाकर प्राणी, सारे जग में भटकाए हैं।
अब रत्नत्रय का फल पाएँ, फल यहाँ चढ़ाने लाए हैं॥
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं॥8॥

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

यह द्रव्य भाव में कारण है, उससे हम अर्घ्य बनाए हैं।
अब पद अनर्घ पाने हेतू, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं॥
धन तेरस व्रत पूजा करके, सब विघ्न दूर हो जाते हैं।
धन वैभव बढ़ता है क्रमशः, नर मोक्ष महासुख पाते हैं॥9॥

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

(सुखमा छन्द)

जेठ कृष्ण दशमी दिन पाए, नगर कम्पिला धन्य बनाए।
जयश्यामा के गर्भ में आए, देव रत्न वृष्टी करवाए॥1॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण की चौथ बताई, जन्मे विमलनाथ जिन भाई।
जन्म कल्याणक देव मनाए, खुश हो जय जयकार लगाए॥2॥

ॐ ह्रीं माघकृष्ण चतुर्थ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल की चौथ कहाई, दीक्षा कल्याणक तिथि गाई।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, शिवपथ के राही कहलाए॥3॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल छठ रही सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, जीवों को सन्मार्ग दिखाए॥4॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ल षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छठी कृष्ण आषाढ़ बखानी, प्रभु जी पाए मुक्ती रानी।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी॥5॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरह प्रकार के चारित्र के अर्घ्य

दोहा-तेरह विध चारित है, जग में पूज्य महान्।
पुष्पांजलि करते यहाँ, करने को गुणगान।।

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्

हिंसा को पाप बताया, शुभ धर्म अहिंसा गाया।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।1।।

ॐ ह्रीं अहिंसा व्रत धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है झूठ पाप हे भाई!, शुभ धर्म सत्य सुखदायी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।2।।

ॐ ह्रीं सत्य व्रत धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चोरी है बहु दुखदायी, है व्रताचौर्य हे भाई!।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।3।।

ॐ ह्रीं अचौर्य व्रत धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मचर्य धर्म कहलाए, अब्रह्म पाप जग गाए।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।4।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य व्रत धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है धर्म अपरिग्रह प्राणी, परिग्रह है दुख की खानी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।5।।

ॐ ह्रीं अपरिग्रह व्रत धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच समिति के अर्घ्य

चौ कर भू लखकर जावें, वे समिति ईर्या पावें।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।6।।

ॐ ह्रीं ईर्या समिति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित मित प्रिय बोलें वाणी, भाषा समीति धर ज्ञानी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।7।।

ॐ ह्रीं भाषा समिति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं निर्दोषाहारी, वे समिति एषणा धारी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।8।।

ॐ ह्रीं एषणा समिति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदान निक्षेपण धारी, होते हैं यत्नाचारी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।9।।

ॐ ह्रीं आदान निक्षेपण समिति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्सर्ग समिति में लागें, भू शोधी में मल त्यागें।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।10।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग समिति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन गुप्ति के अर्घ्य

जो हैं मन गोपनकारी, वे मन गुप्ती के धारी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।11।।

ॐ ह्रीं मन गुप्ति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो वचनों के परिहारी, हों वचन गुप्ति के धारी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।12।।

ॐ ह्रीं वचन गुप्ति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन की चेष्टा परिहारी, हों काय गुप्ति के धारी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।13।।

ॐ ह्रीं काय गुप्ति धारकाय श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है सम्यक् चारित भाई, कहलाए मोक्ष प्रदायी।
तेरह विधि चारित भाई, जो पूज्य है मोक्ष प्रदायी।।14।।

ॐ ह्रीं त्रयोदश चारित्रधारक श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा - विमल गुणों को धारते, विमलनाथ भगवान।
जयमाला गाते विशद, करते हैं गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

जम्बू द्वीप के भरतक्षेत्र में, आर्यखण्ड में मालव देश।
उज्जयनी पट्टन में श्रावक, था गुणपाल गरीब विशेष॥
मुनिवर के दर्श कर सोचे, हम भी दे मुनिवर को दान॥
सप्त ऋद्धि सम्पन्न ऋषिवर, सोम चन्द्र कर आए विहार।
पत्नी से गुणपाल ने बोला, देंगे मुनि को हम आहार॥
पत्नी ने सहमति दे बोला, इक-इक दिन का कर उपवास।
मुनि आहार दान का हम भी, मन से करेंगे पूर्ण प्रयास॥
फिर गुणपाल मुनी के चरणों, वन्दन करके कहता बात।
हो दारिद्रता दूर हमारी, दो हमको गुरु आशीर्वाद॥
मंगल त्रयोदशी व्रत करने, से दरिद्रता होगी दूर।
जीवन सुख शांतिमय होगा, खुशियाँ भी होगी भरपूर॥
कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को, विमलनाथ का कर अभिषेक।
तेरहपान रखे चौकी पर, अक्षतादि फल रखे विशेष॥
आदिनाथ से विमलनाथ तक, जिनवर का करके गुणगान।
श्रुत गणधर अरु यक्ष यक्षिणी, क्षेत्रपाल का कर सम्मान॥
विमलनाथ की पुष्प चढ़ाकर, एक सौ आठ बार कर जाप।
व्रतोपवास कर करें आरती, जिससे कटते भव के पाप॥
तेरह माह कर व्रत पालन, और चतुर्विध करके दान।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य बढ़ेगा, विशद रखो मन में श्रद्धान॥

दोहा - मंगल त्रयोदशी व्रत किया, भाव सहित गुणपाल।
व्रत का पालन कर हुआ, श्रावक मालामाल॥

ॐ ह्रीं मंगल त्रयोदशी व्रताराध्य श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - व्रत की महिमा है अगम, अगम कहा जिनधर्म
विशद धर्म को धारकर, जीव होय निस्कर्म॥

॥ इत्याशीर्वाद : पुष्पाञ्जलि क्षिपेत ॥

धनतेरस व्रत विधि एवं कथा

(व्रतविधि)

कार्तिक कृष्णा 12 के दिन इन व्रतिकों को एक भुक्ति करना चाहिए। त्रयोदशी को प्रातःकाल में शुचिजल से अभ्यंग स्नान (शिर से स्नान) करके नवधौतवस्त्र धारण करना चाहिए। सब पूजाद्रव्य हाथ में लेकर मंदिर में जाकर जिनालय की तीन प्रदक्षिणा देकर ईर्यापथशुद्धिपूर्वक श्री जिनेन्द्र की भक्ति से वंदना करना, वेदी पर श्री विमलनाथ तीर्थंकर की प्रतिमा पातालयक्ष और वैरोटी यक्षी सह स्थापित करके उनका पंचामृत से अभिषेक करना। एक पाटे पर क्रम से 13 पान रखकर उस पर अक्षत, फल, फूल रखकर श्री आदिनाथ से विमलनाथ तक 13 तीर्थंकरों की अष्टद्रव्य से अर्चना करना। श्रुत और गणधर उनकी पूजा करके यक्ष-यक्षी की अर्चना करना। क्षेत्रपाल को तैलाभिषेक करके सिंदूर लगाना। उसके आगे पाँच पान रखकर इस पर अक्षत, फल, फूल रखकर गंध, पुष्प की माला, वस्त्र खोपरे की कटोरी (गरी का गोला आधा लेना), गुड़, लड्डू, वगैरह अर्पण करना। अष्टक, स्तोत्र, जयमाला क्रम से बोलकर यथाविधि अर्चना करना चाहिए। तेल की पाँच-पाँच पूरन पूरी के पाँच नैवेद्य चढ़ाना। बाद में ''ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं विमलनाथ तीर्थंकराय पाताल यक्ष वैरोटी यक्षी सहिताय नमः स्वाहा।'' इस मंत्र से 108 पुष्प चढ़ाना। णमोकार मंत्र का 108 जप करना, यह व्रत कथा पढ़ना। एक थाली में तेरह पान रखकर उस पर अष्टद्रव्य, श्रीफल रखना और महार्घ्य से जिनालय की तीन प्रदक्षिणा करके मंगल आरती उतारना। इस दिन उपवास करके ब्रह्मचर्यपूर्वक धर्मध्यान में समय बिताना। सत्पात्र को आहारदान देना। उपवास करने की शक्ति नहीं है तो तीन वस्तु का नियम लेकर एकभुक्ति करना। इस प्रकार 13 मास तक उस तिथी में पूजा करके अंत में उसका उद्यापन करना। उस समय श्री विमलनाथ तीर्थंकर विधान महाभिषेक से करना। चतुःसंघ को चतुर्विध दान देना। ऐसी इस व्रत की पूरी विधि है।

(कथा)

इस जंबूद्वीप में भरतक्षेत्र में आर्यखण्ड है। उसमें मालव देश में उज्जयिनी नामक एक रमणीय पट्टण है। वहाँ बहुत दिन के पहले गुणमाल नामक गरीब परन्तु सदाचारी श्रावक रहता था। उसकी गुणवती नाम की एक लावण्यवती और सुशीला धर्मपत्नी थी उनके गुणवंत नामक एक सुन्दर सद्गुणी पुत्र था। इनको दुर्दैव से दरिद्रावस्था प्राप्त होने से वे मजदूरी से गुजारा करते थे।

नगर में बार-बार मुनिश्वर आहार के लिए आते थे उनको बहुत श्रावक-श्राविकाएँ बड़ी भक्ति से आहारदान देते थे। यह देखकर उस गुणपाल श्रावक के मन में मुनिश्वर को आहारदान देने की इच्छा होती थी। मगर दान देने की ताकत न होने से वह चिंताकुल होता था।

एक दिन सोमचंद्र नामक सप्तऋद्धि सम्पन्न एक निर्ग्रंथ मुनिश्वर जिनमंदिर में आये थे। यह देखकर वह गुणपाल श्रेष्ठी अपनी स्त्री से बोला - ''इस नगरी में बहुत भाविक श्रावक-श्राविकाएँ मुनी महाराज को आहारदान देकर पुण्य संचय करते हैं। हम भी आहारदान करके पुण्यसंचय करें, ऐसी मेरी प्रबल इच्छा है। इस विषय में तुम्हारी क्या राय है? तब वह उनको बोली - हे प्राणनाथ! मुनिश्वर को दान देने की अपनी शक्ति नहीं है। तो भी अपने को एक-एक दिन उपवास करके उदरनिर्वाह साधन में से आहारदान देना चाहिए। फिर वे दोनों जिनमंदिर में गये। जिनेश्वर को भक्ति से वंदन करके सोमचन्द्र मुनिश्वर की वंदना करके उनके समीप जाकर बैठे। कुछ समय उनके मुख से धर्मोपदेश सुनकर वह गुणपाल श्रेष्ठी अपने दोनों हाथ विनय से जोड़कर उनको बोला - हे दयानिधे स्वामिन्! हम दारिद्र्य से बहुत पीड़ित हुए हैं। उसके परिहार के लिए कुछ व्रत विधान कहो। आप चातुर्मास भी यहाँ कीजिए ऐसी हमारी नम्र प्रार्थना है। उनका यह वचन सुनकर वे मुनिवर्य दयार्द्र बुद्धि से बोले - हे भाग्योत्तम! तुम 'मंगलत्रयोदशी' यह व्रत पालन करना। इससे तुम्हारा दारिद्र नष्ट होकर तुम सब तरह से अवश्य सुखी होंगे। ऐसा कहकर उन्होंने चातुर्मास की सम्मति दे दी। फिर यह दंपती उस व्रत की विधी पूछकर व्रत ग्रहण करके वंदन करके घर में आ गये।

आगे चातुर्मास प्रारंभ हो गया। फिर वह गुणपाल श्रेष्ठी और उनकी धर्मपत्नी एक दिन के बाद उपवास करने लगे। उपवास के दिन आहारदान की तैयारी करके उन मुनिश्वर को आहारदान देने लगे।

इस प्रकार चार मास आहारदान देने का निश्चय किया। इस प्रकार चातुर्मास में आहार देते-देते कार्तिक कृष्ण 13 के दिन उन्होंने व्रत पूजा-विधान करके उन सोमचंद्र मुनिश्वर को महाभक्ति से आहारदान दिया। बाद में उनको भेजने के लिए वह गुणपाल श्रेष्ठी उनके साथ उद्यान की ओर निकला, उस समय वे मुनिराज उनको बोले हे भव्योत्तम! अब हम जाते हैं। तुम यहाँ से घर वापिस जावो। तब वह बोला - हे दयालु मुनिवर्य! आपकी आज्ञा से घर जाता हूँ। ऐसा कहकर उसने मुनि को नमस्कार किया। उन्होंने उसको 'सद्धर्मवृद्धिरस्तु' ऐसा आशीष देकर अपना पादस्पर्शित एक पत्थर प्रदान दिया। तब वह पत्थर गुणपाल बड़े आदर से लेकर आया। यह पत्थर गुरूकृपा से मिला है। इसलिए मुझे पूज्य है। ऐसा कहकर उसने उसकीपूजा की, इतने में उस श्रेष्ठी का गुणवंत नाम का कुमार अपने हाथ में खुरपा लेकर खेलते-खेलते उधर आ गया। उसी समय वह खुरपा उसके हाथ से उस पत्थर पर गिरा। वह खुरपा सुवर्णमय बन गया। यह उचित ही है। यह पत्थर सप्तऋद्धिसम्पन्न मुनिश्वर के हाथ से मिलने से उसमें पारस का गुण क्यों नहीं होगा? उसके संपर्क से लोहे का सोना क्यों नहीं बनेगा? अवश्य होगा, यह देखकर उसको आश्चर्य हुआ। ' यह पत्थर ब्रह्मज्ञानी मुनिश्वर ने दिया है। इसलिए पारस-पत्थर का गुण आया है' ऐसा उसके मन में विश्वास हो गया। यह वार्ता नगर में शीघ्र ही चारों तरफ फैल गई। नगरवासी इकट्ठे हो गये। प्रत्यक्ष सब चमत्कार जानकर लोगों को जैन धर्म का महत्व जँचा। सब लोगों ने श्रेष्ठी की बहुत प्रशंसा की। वह दिन कार्तिक कृष्ण १३ रहने से तथा मंगलवार होने से उसको ''मंगल त्रयोदशी'' ऐसा लोग कहने लगे। उस समय से ही 'धन त्रयोदशी' नाम भी प्रचार में आया है। आगे वह गुणपाल श्रेष्ठी बड़ा श्रीमान होकर दान पूजादि क्रिया करते-करते आनंद से काल बिताने लगा।

इस प्रकार उन श्रेष्ठी ने चातुर्मास में लिया हुआ नियम यथावत् पालन कर उसका उद्यापन किया, इससे उनको उत्तम सौख्य प्राप्त हुआ।

लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र

1. **अपार लक्ष्मी प्राप्ति मन्त्र :** ॐ ह्रीं अक्षीणमहानस ऋद्धि प्राप्तेभ्यो नमः।
   विधि : इस मंत्र का लाल पुष्पों से सवा लाख जाप करने पर अपार लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।
2. **लक्ष्मी प्राप्ति मन्त्र :** ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः। ॐ नमो भगवऊ गोमयस्य, सिद्धस्य बुद्धस्य अक्षीणस्स भास्वरी ह्रीं नमः स्वाहा।
   विधि : नित्य प्रातःकाल शुद्ध होकर दीप धूप पूर्वक जाप करें तो लाभ होय, लक्ष्मी प्राप्ति होय।
3. **लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र :** ॐ ह्रीं हूँ णमो अरहंताणं हूँ नमः।
   विधि : प्रतिदिन १०८ बार पढ़ें।
4. **अभ्युदय कारक मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं ईं ऐं अर्हं-अर्हं क्लीं प्लूं प्लूं नमः।
   विधि : प्रतिदिन १०८ बार जप से वैभव प्राप्त होता है।
5. **लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र :** ॐ नमो भगवती गुणवती महामानसी स्वाहा।
   विधि : ७ कंकरियाँ २१ बार मंत्रित कर चारों दिशाओं में फेंकने से व्याधि शत्रु आदि का भय नहीं रहता एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।
6. **लक्ष्मी लाभ मंत्र :** ॐ णमो अरहंताणं ॐ नमो भगवइ महाविज्जाए सत्तट्ठाए मोर हुलु हुलु चुलुचुलु मयुर वाहिनीए स्वाहा।
   विधि : पौष कृष्ण १० को निराहार रहकर १००८ जाप करे फिर परदेश गमन के व्यापार के समय ७ बार स्मरण से लक्ष्मी व अन्न का लाभ होता है।
7. **लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र :** ॐ ह्रीं णमो महायम्मा पत्ताणं जिणाणं।
   विधि : इस मंत्र का १२००० जाप करें तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।
8. **लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र :** ॐ ह्रीं ह्रूं णमो अरहंताणं हूं नमः
   विधि - प्रतिदिन १०८ बार पढ़े तो धन बढ़े।
9. **लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र :** ॐ ह्रीं ऐं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा।

10. **ऋद्धि :** ॐ ह्रीं श्रीं कीर्ति मुखमन्दिरे स्वाहा।

विधि : प्रतिदिन १०८ बार जाप करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होय।

11. **लक्ष्मी दायक मंत्र :** ॐ ह्रीं हं णमो अरिहंताणं ह्रीं नमः।

विधि – प्रतिदिन मंत्र को १०८ बार पढ़े।

12. **अभ्युदय वैभव होय :** ॐ ह्रीं श्रीं इं ऐं अर्हं अर्हं क्लीं प्लूं प्लूं नमः।

विधि – प्रतिदिन १०८ बार जपने से अभ्युदय वैभव होय।

13. **स्थायी धन प्राप्ति मंत्र :** ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।

14. **अटूट लक्ष्मी होय मंत्र :** ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।

विधि – तीन दिन में १२०० जाप करें उपवास के साथ, आसन, माला, वस्त्र पीले रंग के लेना। जाप करते समय अखण्ड धूप-दीप रखना। जाप पूर्ण होने के बाद एक माला प्रतिदिन करना चाहिए।

फल – अटूट लक्ष्मी प्राप्ति, धन-धान्य प्राप्ति, शरीर सुख एवं चारों ओर प्रताप बढ़ें।

15. **यश व लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र :** ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं (ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः स्वाहा।

विधि – पुष्य नक्षत्र के दिन से पीली माला, पीले वस्त्र, पीले आसन का उपयोग करके, सवा लाख मंत्र का जाप करें मन्त्र सिद्ध होगा। साधना के दिनों में एक बार भोजन, भूमिशयन, ब्रह्मचर्य का पालन, सप्त व्यसन का त्याग, पंच पाप का त्याग करें। स्वाहा शब्द के साथ प्रत्येक मंत्र पर धूप देते जायें तथा दीपक जलता रहे। (मंत्रसिद्धि के पश्चात् प्रतिदिन एक माला जपने से धन की वृद्धि होती है।)

16. **धन संपत्ति रक्षा मंत्र :** ॐ ह्रां ह्रौं श्रूं ह्रः कलिकुंड स्वामि जये विजये अप्रतिचक्रे अर्थ सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

विधि – यह मंत्र ताम्र पत्र पर लिखकर द्रव्य (पैसे के भण्डार) में रखें तो धन बढ़े और बिक्री होय।

17. **श्री घंटाकर्ण द्रव्यप्राप्ति मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं ॐ घंटाकर्ण महावीर लक्ष्मी पूरय-पूरय सुख सौभाग्य कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि - धनतेरस को ४० माला, रुप चौदस को ४२ माला तथा दीपावली को ४३ माला का जाप करें तो उस वर्ष निश्चित ही लक्ष्मी प्राप्ति हो। उत्तर दिशा को मुंह करके सफेद वस्त्र, सफेद आसन, सफेद माला का उपयोग करें व व्यापार वृद्धि मंगल कलश की स्थापना करें। दीपक जलाएं।

18. **धन-धान्य बढ़ाने वाला मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रः कलिकुण्ड स्वामिने नमः जये विजये अपराजिते चक्रेश्वरी ममार्थं सिद्ध सिद्ध कुरु कुरु स्वाहा।

विधि - किसी भी धान के सात अच्छे दाने लेकर उस पर यह मंत्र सात बार पढ़ना तथा वह दाने वस्तु में वापस डाल दें तो उस वस्तु की वृद्धि होगी तथा उससे लाभ होगा।

19. **व्यापार द्वारा धन लाभ दायक मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं क्लीं श्री लक्ष्मी मम गृहे धन पूरय पूरय चिन्ता दूरय दूरय स्वाहा।

विधि - इसमंत्र की १०८ जाप करें तो धन लाभ होगा।

20. **श्री लक्ष्मी देवी का मंत्र :** ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।

विधि - पूर्व की ओर मुंह करके पीले वस्त्र व पीले रंग की माला का प्रयोग करें, मार्गशीर्ष नक्षत्र व गुरुवार के दिन मंत्र का जाप शुरु करें। एक लाख जाप होने पर मंत्र सिद्ध हो जाएगा, लक्ष्मी प्रत्यक्ष दर्शन देगी।

21. **लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं हर हर स्वाहा।

विधि - इसमंत्र को १०८ बार सफेद पुष्पों से ३ दिन तक जाप करने से सर्व सम्पत्तिवान होता है। जाप श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा के सामने करना चाहिए।

22. **लक्ष्मी दायक मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ॐ नमो भगवउ गोयमसस्य सिद्धस्य बुद्धस्य अक्खीणस्स भास्वरी ह्रीं नमः स्वाहा।

विधि – यह मंत्र नित्य प्रातः काल शुद्धता पूर्वक दीप धूप सहित जपने से लक्ष्मी प्राप्त होती है।

23. **लाभ अन्तराय कर्म नाशक मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं मम लाभ अन्तराय कर्म निवारणाय स्वाहा।

विधि – जिनेन्द्र भगवान् के सामने धूप देते हुए प्रतिदिन एक माला जपें।

24. **लक्ष्मी प्राप्ति अर्हं मंत्र :** ॐ ह्रीं ह्रां अर्हं णमो अरहंताणं ह्रीं नमः।

विधि – शुभ मुहूर्त में पीले वस्त्र धारण कर पीली माला से जाप शुरु करें। १२५००० जाप होने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। लक्ष्मी प्रसन्न होती है। फिर प्रतिदिन एक माला फेरें। बड़ा श्रेष्ठ मंत्र है।

25. **लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र :** ॐ णमो अरहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आइरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्व साहूणं।

विधि – प्रातः सूर्योदय से एक घंटा पहले उठकर सर्व प्रकार की शुद्धि करके पीले वस्त्र तथा पीली माला और पीला आसन लेकर बैठें। पूर्व दिशा में मुख करके इस मंत्र की एक माला फेरें। फिर आसन पर बैठे हुए उत्तर दिशा में मुख करके एक माला फेरें। फिर पश्चिम दिशा में, फिर दक्षिण दिशा में तथा वापस पूर्व दिशा में मुख करके माला पूर्ण करें। इस प्रकार चारों दिशा में पाँच माला फेरने से छह महीने में ही विपूल सुख-संपत्ति की प्राप्ति होती है। यदि छह महिने तक एकासन करके जप किया जाय तो आश्चर्यजनक प्रभाव होता है। यह रहस्य ''नवकार महिमा छन्द'' में कुशलतम वाचक ने इस प्रकार बताया है –

पूरक दिशि चारे आदि प्रपंचे, समर्या संपत्ति सार।
सद्गुरु ने सन्मुख विधि समरतां सफल जनम संसार॥

26. **लक्ष्मी प्राप्ति :** ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं महालक्ष्म्यै नमः (स्वाहा)

27. **द्रव्य प्राप्ति मंत्र :** ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं मम ऋद्धि-वृद्धि समीहितं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि – १२५००० जाप करे फिर बाद में १०८ बार रोज जाप करें।

28. **सर्व सम्पदादिक प्राप्त मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं हर हर स्वाहा।

विधि – श्री पार्श्वनाथ भगवान के सामने १०८ सफेद पुष्पों से तीन दिन जपने से सर्व सम्पदा की प्राप्ति होय। लेकिन तीनों दिन नये पुष्प लें।

ऋण मोचन मंत्र

1. **ऋण मोचन मन्त्र :** ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं गं ओ गं नमो संकट कष्ट हरणाय, विकट दुख निवारणाय, ऋणमोचनाय स्वाहा।

   विधि : शुभ दिन से शुरु करके प्रति दिन १० माला जाप करें।

2. **दीपावली कर्ज मुक्ति मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं ॐ घंटाकर्ण महावीर लक्ष्मी पूरय-पूरय सुख सौभाग्यं कुरु-कुरु स्वाहा।

   विधि : दीपावली को सफेद वस्त्र, सफेद आसन, सफेद माला का उपयोग करें व व्यापार वृद्धि मंगल कलश की स्थापना करें। घी का दीपक जलाएं उत्तर दिशा को मुंह करके 11 दिन जाप करें तो वह वर्ष निश्चित ही कर्ज मुक्ति हो।

3. **दरिद्रता नाश के लिए :** ॐ ह्रीं दारिद्रय विनाशने अष्टलक्ष्मयै ह्रीं नमः।

   विधि : दीपावली की रात्रि में कमलगट्टे या स्फटिक की माला से पूर्व दिशा में मुख करके दीपक जलाकर निम्न मंत्र का जाप करें –

   पहले मंत्र का उत्कीलन करें

   ''ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलन कुरु कुरु स्वाहा''

व्यापार वृद्धि मंत्र

1. **दुकान खोलते समय बोलने का मंत्र :** ॐ णमो भगवते विश्वचिन्तामणि लाभ दें, रुप दे, जश दे, जय दे, आनय आनय महेश्वरी मन वांछितार्थ पूरय पूरय सर्व सिद्धिं ऋद्धिं सर्वजन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि : दुकान खोलते समय पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके मंत्र को २७ बार उच्चारण करके दुकान का ताला खोलें एवं परमात्मा का नाम स्मरण कर दुकान में प्रवेश करें तो दुकान अच्छी चलेगी।

2. **व्यापार वृद्धि मंत्र :** ॐ ह्रीं व्यापार वृद्धि रहितयोपद्रव निवारकाय श्री शान्तिनाथाय नमः।

   विधि : त्रिकाल मन्दिरजी में अथवा घर में १०८ बार पढ़ें।

3. **वस्तु विक्रय मंत्र :** णट्ठट्ठ मयट्ठाणे पणट्ठ कम्ट्ठ णट्ठ संसारे।
   परमट्ठ णिट्ठियट्ठे अट्ठे गुणाधीसरंवंदे॥

   विधि : इस मंत्र का पीली सरसों अथवा छोटे-छोटे सात पत्थरों पर १०८ बार जाप करके कोई भी वस्तु सामान में मिला दें तो वस्तुओं की बिक्री अच्छी होती है। विशेष दुर्बुद्धि का नाश होय, राज से भय टले, अष्ट सिद्धि व नव निधि की प्राप्ति होय, प्रताप बढ़े, रोगादि नष्ट होय, सुख प्राप्त होय, १०८ सफेद पुष्पों को प्रतिदिन जप कर दस हजार जाप करें।

4. **व्यापार में धन प्राप्ति मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्री लक्ष्मी मम गृहे धनं पूरय-पूरय चिंतां दूरय-दूरय स्वाहा।

   विधि : प्रतिदिन प्रातः काल मन्दिरजी में एक माला जाप करना चाहिए।

5. **व्यापार में लाभ मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्येयं अर्हं नमः।

   विधि : इस मंत्र को दिन में तीन बार जपें तो व्यापार में लाभ होय सर्वत्र जय हो।

6. **व्यापार में धन प्राप्ति मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं क्लीं श्री लक्ष्मी मम गृहे धनं पूरय-पूरय चिंतां दूरय-दूरय स्वाहा। (१०८)

7. **लाभ व जयदायक मंत्र :** ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्येयं अर्हं नमः।

   विधि : यह मंत्र दिन में तीन बार १०८ बार जपने से व्यापार में लाभ हो, सर्वत्र जय हो।

सर्व समृद्धि के लिए मंत्र

1. ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत परमसिद्धेभ्यो सर्व शांति कुरु कुरु ह्रीं फट् नमः।
2. ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत परम सिद्धेभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं नमः।
4. ॐ नमः सिद्धेभ्यः।
5. शुभंकरोति कल्याणं आरोग्यं धन सम्पदा।
   शत्रु बुद्धि विनाशाये, दीपो ज्योति नमोऽस्तुते॥
   विधि : इन मंत्रों में से किसी भी मंत्र की सवा लाख जाप कर मंत्र को सिद्ध करा लें, फिर मंत्र की प्रतिदिन १०८ बार जाप करें।
6. **समृद्धि कारक मंत्र :** ॐ श्रिये श्रीकरि धनकरि धान्यकरि पुष्टिकरि वृद्धिकरि अविघ्नकरि ठः ठः।
   विधि : शुभ मुहूर्त में शुरुकर एक लाख जाप करें तथा वसुधारण आदि स्थान करें तो दुःख दारिद्रय और सब रोगों से छुटकारा होय।

शान्ति मंत्र

1. **शान्ति मंत्र :** ॐ ह्रां अर्हद्भ्यः स्वाहा, ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा, ॐ ह्रूं आचार्येभ्यः स्वाहा, ॐ ह्रौं पाठकेभ्यः स्वाहा, ॐ ह्रः सर्वसाधुभ्यः स्वाहा।
   विधि : कार्य सिद्ध तक प्रतिदिन १०८ बार जपे।
2. **शान्ति मंत्र :** ॐ ह्रीं प्रत्यंगिरे ममस्वस्ति शान्ति कुरु-कुरु स्वाहा।
   विधि : मंत्र के स्मरण मात्र करने से सर्व प्रकार की शान्ति होती है।
4. **शान्ति मंत्र :** ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय, दिव्य तेजो मूर्त्तये श्री शांतिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्न प्रणाशनाय, सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व परकृत क्षुद्रोपद्रव नाथ विनाशाय, सर्वक्षाम डामर विघ्न विनाशनाय, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः। मम सर्व शान्ति कुरु-कुरु स्वाहा
5. **शान्ति मंत्र लघु :** ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व शान्ति पुष्टि कुरु-कुरु स्वाहा।
   विधि : त्रिकाल जाप करें अपूर्व शान्ति प्राप्त होगी।
6. **सर्व शान्ति करण मंत्र :** ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः सर्व विघ्न शांतिं कुरु-कुरु स्वाहा।

यंत्र प्रकरण

1 उज्जवल भविष्य बनाता यंत्र

यंत्र नं. 1

१५	८	१	१४	१७
१६	१४	७	५	२३
२०	२०	१३	६	४
३	२१	१९	१२	१०
९	२	२५	१८	११

विधि : शुभ मुहूर्त में परमात्मा का ध्यान करते हुए अष्टगंध से बनाएं। नित्य धूप दीप दें, पास में रखें तो परदेश जाते समय अथवा परदेश में रहते समय में लाभ हो। सभी से भी वाद-विवाद में विजय हो, किसी के भी पास जाने में आदर-सम्मान मिलें, नि:सन्तान को पुत्र प्राप्ति हो, निर्धन को धन प्राप्त हो, अकस्मात भय से रक्षा हो, चोरों के उपद्रव से सुरक्षा हो, सर्व चिन्ता नष्ट हो, प्रत्येक कार्य में विजय प्राप्त हो इसलिए जो अपने भविष्य को उज्जवल बनाना चाहते हैं उन्हें इस यंत्र को बनाकर पास में रखना चाहिए।

2 व्यापार तथा, लक्ष्मी वद्धक यंत्र

यंत्र नं. 2

१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

विधि : इस यंत्र के प्रभाव से व्यापार अधिक चलता है। इस यंत्र को कुलड़ी में रखकर, सुपारी, सवा रुपया, हल्दी, धनिया डालकर दुकान की गद्दी के नीचे गाड़ना, उस पर बैठना तो व्यापार अधिक चलता है।

3 व्यापार बहुत चले यंत्र

विधि : इस यंत्र को दिवाली के दिन अर्धरात्रि के समय सिन्दूर से दुकान के बाहर लिखें एवं यंत्र की प्रतिष्ठा कर दें तो दुकान अधिक चले। अथवा अमावस्य के दिन अर्धरात्रि के समय लिखें और जिसको बनाया हो उसे प्रात:काल देवें।

यंत्र नं. 3

१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

4 व्यापार वृद्धि यंत्र

यंत्र नं. 4

२४	३२	२	७
६	३	२९	२७
३१	२५	८	१
४	५	२६	३०

विधि : इस यंत्र को कुलड़ी में रख, सुपारी, रुपया, हल्दी, धनियां डालकर दुकान की गद्दी के नीचे गाढ़ना उस पर बैठना, तो व्यापार अधिक चलता है।

5 व्यापार उन्नतिकारी यंत्र

यंत्र नं. 5

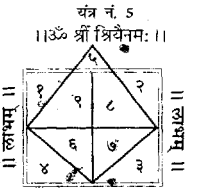

विधि : इस यंत्र को दीपावली के दिन दीवाल पर अथवा भोजपत्र पर लिखकर दुकान फैक्ट्री आदि में रखना चाहिए और देवताओं के साथ पूजा करना चाहिए। व्यापार आदि को बढ़ाने व उन्नति लाने का परमोपयोगी परीक्षित सिद्ध यंत्र है।

यंत्र नं. 6

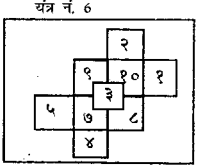

6 व्यापार वृद्धि लाभकारी यंत्र

विधि : इस यंत्र को दुकान पर पूजा के स्थान पर अष्टगंध से दीवाली पर बनाएं। अथवा बनाकर पास में रखें तो व्यापार या क्रय-विक्रय कार्य में लाभ होय।

7 व्यापार वर्द्धक यंत्र

यंत्र नं. 7

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ठः	४२	३५	४०	फु
ठः	३७	३९	४१	फु
ठः	३८	४३	३६	फु
है	भुर	भुर	भुर	फु

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः।

विधि : इस यंत्र की १० माला रोज २१ दिन तक सफेद माला, सफेद आसन और सफेद पुष्पों से जपे। यंत्र को चांदी, सोना, तांबा, के पत्रे पर खुदवा कर रखें। वदी चतुर्दशी से जाप करें, रात के समय जपें।

यंत्र नं. 8

७३	८९	२	२
७६	३	७७	६६
७९	७४	८	१
४	७५	५	७

8 व्यापार वृद्धि यंत्र

विधि : इस यंत्र को दीवाली के दिन दुकान के सामने रखें तो बिक्री अधिक होती है।

यंत्र नं. 9

ॐ	ह्रीं	हं	सः
ष	अ	ह	व
व	ह	क्ष	व
अ	व	व	ह
ह	व	व	ह

9 बिक्री अधिक होय यंत्र

विधि : इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर पास में रखें अथवा दुकान में उच्च स्थान पर रखें तो बिक्री अधिक होय।

यंत्र नं. 10

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६

10 व्यवसायवर्धक यंत्र

विधि : इस यंत्र को दीवाली के दिन शुभ दिन, शुभ समय में लिखकर दीप- धूप, पुष्प से पूजा करते रहना। तिजोरी में रखें या जहाँ पर धन सम्पत्ति रखते है। वहाँ पर रखें।

11 व्यापार वृद्धि यंत्र

यंत्र नं. 11

१०	१८	१	१४	२२
११	२४	७	२०	३
१७	५	१३	२१	९
२३	६	१९	२	१५
४	१२	२५	८	१६

विधि : पूर्व की ओर मुंह कर, अच्छे मुहूर्त में, अष्टगंध स्याही से भोजपत्र पर लिखकर यंत्र को एक कोरे कुल्हड़िये में जौ, सुपारी, घृत, अजवाइन सहित डालकर, दुकान में मालिक जहाँ बैठकर दुकानदारी करे, उस जगह जमीन में गाड़ दें फिर उस स्थान पर गद्दी बिछाकर उस पर बैठे, दुकानदारी करे तो व्यापार में अत्यंत वृद्धि हो।

यंत्र नं. 12

९२	९९	२	७
६	३	९६	९५
९८	९३	८	१
४	५	९४	९७

12 व्यापार लाभ यंत्र

विधि : इस यंत्र को दीवाली के दिन मध्यरात्रि में अष्टगंध से बनावें अथवा जिसके लिये बनाया हो उसका नाम लिखकर पास में रखने से जय होती है। व्यवसाय करते समय गद्दी के नीचे रखने से लाभ होता है।

यंत्र नं. 13

४२०००	४९०००	२०००	७०००
६०००	३०००	४६०००	४५०००
४८०००	४३०००	८०००	१०००
४०००	५०००	४४०००	४७०००

13 व्यापार वृद्धि यंत्र

विधि : दीवाली की रात्रि में इस यंत्र को अष्टगंध से लिखकर, प्रतिष्ठा कराके गद्दी के नीचे दबाकर बैठने से व्यवसाय में लाभ होता है। यंत्र को लोभान की धूप दें तो सिद्ध हो जायेगा।

यंत्र नं. 14

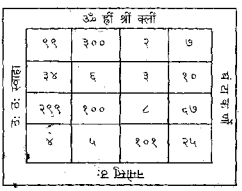

14 व्यापार वृद्धि यंत्र

विधि : इस यंत्र को दुकान की दीवार के ऊपर सिन्दुर से लिखें तो व्यापार में बहुत लाभ होता है।

15 व्यापार वर्ग में प्रभाव प्रशंसा वर्धक यंत्र

यंत्र नं. 15

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

विधि : इस यंत्र को दीवाली के दिन दरवाजे पर, मकान की दीवार पर लिखना चाहिए अथवा भोजपत्र पर लिखकर पास में रखने से व्यापारी वर्ग में इज्जत बढ़ेगी। हर एक कार्य में लोग सलाह पूछने आयेंगे। सभी प्रशंसा करेंगे। व्यापारियों में प्रभाव बढ़ेगा।

यंत्र नं. 16

५०	५७	२	७
६	३	५४	५३
५६	५१	८	१
४	५	५२	५५

16 व्यापार चालन यंत्र

विधि : इस यन्त्र को घर के दरवाजे पर गाड़े तो उत्तम व्यापार चले।

यंत्र नं. 17

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

17 व्यापार वृद्धि-लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र

विधि : इस यंत्र को सोना चांदी या तांबे के पतड़े पर खुदावे। अष्टगंध से रवि-पुष्य में लिखकर पूजें। व्यापार वृद्धि होय। लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

18 व्यापार वृद्धि मंत्र

विधि : शुभ मुहूर्त्त में बनाएं दुकान में रखें तो व्यापार वृद्धि हो, विजय हो, ताबीज में डालकर गले में पहने तो गर्भ रक्षा होय, पीड़ा मिटे।

यंत्र नं. 18

४५	३६	५०	३९
४२	४७	३७	४४
३५	४६	४०	४९
४८	४१	४३	३८

19 व्यापार वृद्धि यंत्र

यंत्र नं. 19

९०	७२	८	८
८	९	७	६०
७७	२७	८	१
७	५	७९	७४

विधि : इस यंत्र को दिवाली के शुभ दिन दुकान पर लाल चन्दन से लिखकर प्रतिष्ठा कर दें तो व्यापार में अधिक लाभ हो। इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से शुभ दिन में लिखकर दुकान में अपने गल्ले में रखें तो व्यापार में अधिक लाभ हो।

20 व्यापार वृद्धि यंत्र

विधि : इस छत्तीस यंत्र को चालू विधि से बनाकर उपयोग में लायें तो व्यापारी वृद्धि होय।

यंत्र नं. 20

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

यंत्र नं. 21

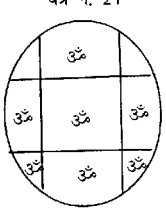

21 व्यापार वृद्धि यंत्र

विधि : इस यंत्र को चालू विधि से बनाकर उपयोग में लायें तो व्यापारी वृद्धि होय।

यंत्र नं. 22

ॐ ह्रीं लक्ष्मी

श्री महावीराय नमः

१० ॐ	३० ह्रां	७० ह्रीं	११ ह्रूँ
६१ ह्रौं	१२ ह्रः	६ अ	३१ सि
१३ आ	७२ उ	२८ सा	८ व
२६ ष	७ ट्र	१४ न	७१ मः

वि धा य का य

22 लक्ष्मी प्राप्ति का अद्भुत मंत्र

(1) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ठैं ॐ घण्टा कर्ण महावीर लक्ष्मी पूरय-पूरय सुख सौभाग्य कुरु-कुरु स्वाहा। (2) ॐ श्रीं ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः।

विधि : धनतेरस 40, चौदस 42, पन्द्रस को 43, माला लाल वस्त्र पहनकर लाल आसन पर बैठकर लाल माला से जपें। मुख पूरब या उत्तर की ओर रखें। एक कलश विराजमान करें साथ में तीर्थंकर की फोटो रखें। दीपक जलायें तथा संयमपूर्वक माला फेरें। (यदि उपरोक्त मंत्र की माला न जप सकें तो णमोकार मंत्र जपें।)

23 व्यापार नजर निवारण यंत्र

यंत्र नं. 23

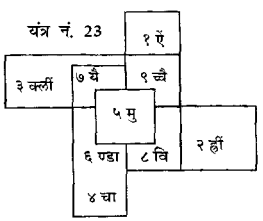

विधि : इस यंत्र को दुकान की चौखट या दहलीज पर लगाने से उस दुकान व व्यापार को नजर व टोक नहीं लगती है। किसी का शाप या बद्दुआ भी इस पर असर नहीं करती।

24 गड़े धन की प्राप्ति यंत्र

यंत्र नं. 24

२ ॐ	७ घं	६ टा
९ मो	५ स्तुते	१ क
४ न	३ ह्रीं	८ र्णो

विधि : इस यंत्र को पृथ्वी पर बेलपत्र के रस और बेलपत्र की कलम से एकांत में बैठकर २००० बार लिखें तो गड़ा हुआ धन प्राप्त होता है।

25 ऋण मुक्ति यंत्र

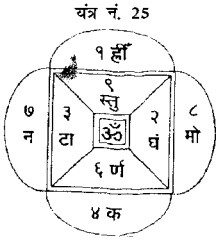

यंत्र नं. 25

विधि : इस यंत्र को रवि पुष्य नक्षत्र में केशर से लिखकर दुकान में रखें एवं घंटाकर्ण मूलमंत्र को जाप करते हुए व्यापार करें, अवश्य ही ऋण मुक्ति मिलेगी।

26 ऋण मुक्ति बीसा यंत्र

यंत्र नं. 26

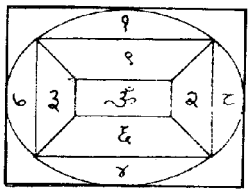

विधि : इस यंत्र को ४० दिन में ५ हजार की संख्या में भोजपत्र पर केसर से लिखें। मंगलवार के दिन से लिखना शुरु करें। धूप, दीप, नैवेद्य से पूजा करके, आखिरी दिन एक यंत्र दाहिनी भुजा पर बांध लें। बाकी के यंत्र आटे की गोलियों में बन्द कर नदी में बहा दें, तो थोड़े ही दिनों में ऋण से मुक्ति हो जायेगी।

27 ऋण मुक्ति यंत्र

यंत्र नं. 27

७९५	५	३९	६६३
३७	६७	८९	६५
६८		३	८८
१०	८७	६६	२४

विधि : इस यंत्र को मंगलवार या रविवार को भोजपत्र पर अनार की कलम से लाल स्याही से लिखकर मोमजामे में लपेट कर अपने पास रखें, थोड़े ही दिनों में ऋण से मुक्ति हो जाएगी। देवी सहायता प्राप्त होगी। यंत्र के खाली स्थान पर ऋणी व्यक्ति अपना नाम लिखें।

28 लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र

यंत्र नं. 28

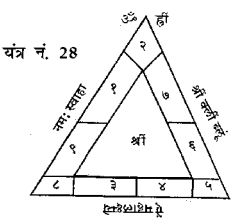

विधि : यह यंत्र अष्टगंध से दीवाली के दिन शुभ मुहूर्त में दीवाल पर लिखें।

29 लक्ष्मी दाता यंत्र

यंत्र नं. 29

२४२	२४९	२	७
६	३	२४६	२४५
२४८	२४३	८	१
४	५	२४४	२४७

विधि : इस यंत्र को अष्टगंध से, चमेली की कलम से बनाकर पास में रखे तो लक्ष्मी प्राप्ति हो।

यंत्र नं. 30

५६	७	४२
२१	३५	४९
२८	६३	५४

30 लक्ष्मी की प्राप्ति यंत्र

विधि : इस यंत्र को अष्टगंध से दिवाली के दिन रोहणी नक्षत्र में लिखकर घड़े में रखकर भंडार में रखने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

31 श्री महालक्ष्मी प्राप्ति यंत्र

विधि : यह त्रिक (तीन) का यन्त्र लक्ष्मी पूजन का है। चांदी के कलश में लिखकर घर में स्थापित करें तो लक्ष्मी की प्राप्ति अवश्य होती है।

यंत्र नं. 31

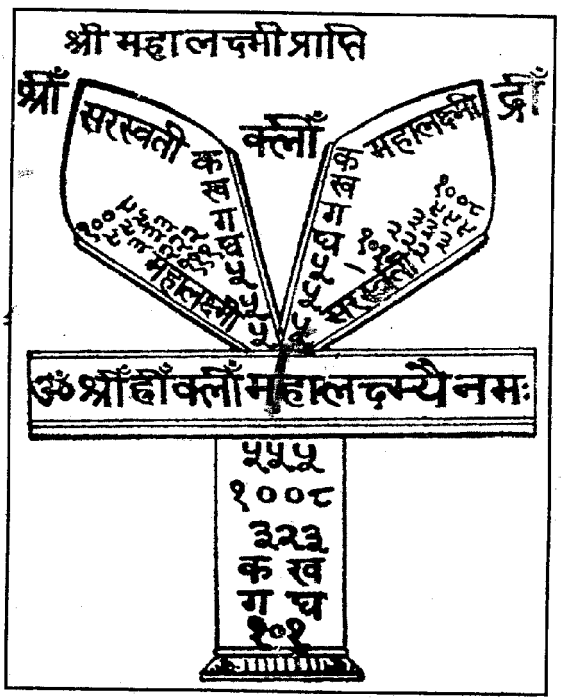

यंत्र नं. 32

१	७	६	२	८	९
५	१	७	६	२	१
७	६	१	७	६	४
४	७	९	१	७	१४
१	२	४	५	७	५

32 अकस्मात् धन प्राप्ति यंत्र

विधि : इस यंत्र का सफेद गुंजा के रस से जैतून की कलम से हर मंगल को अंत की संख्या से लिखें, २१ बार लिखने पर सिद्ध होता है। पीछे अष्टगंध से लिखकर दाएं हाथ में बांधे तो अकस्मात धन लाभ होता है।

33 लक्ष्मी लाभ यंत्र

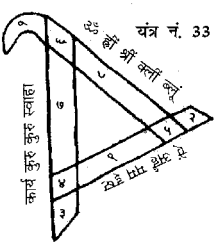

विधि : दीवाली के दिन बही-खातों पर हल्दी से इस यंत्र मंत्र को लिखे तो लक्ष्मी लाभ होगा। नीचे लिखे मंत्र को १०८ बार नित्य पढ़ें।

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं बलूं अर्हं नमः।

यंत्र नं. 34

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

34 धन प्राप्ति यंत्र

विधि : इय यन्त्र को दीवाली के दिन रात्रि में लिखना चाहिये। शुभ मुहूर्त में दुकान के अन्दर सामने दरवाजे पर या मंगल कलश स्थापना के दाहिनी ओर दीवार पर सिन्दूर से लिखें तो व्यापार बढ़ता है। व्यापार करते समय किसी प्रकार का भय, संकट आता हो तो मिट जायेगा, प्रभाव बढ़ेगा और इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिख कर पास में रखना भी शुभ सूचक है।

35 सिद्धि दायक यंत्र,
36 नित्य लक्ष्मीदायक यंत्र

विधि : इन यन्त्रों को विधिवत् बनाकर पास में रखें तो लाभ होय।

यंत्र नं. 35

४६	५३	२	७
६	३	५०	४९
५२	४७	८	१
४	५	४८	५१

यंत्र नं. 36

२५	२०	२७
२६	२४	२२
२१	२८	२३

37 लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र

विधि : विधिवत यंत्र बनाकर ७२ दिन में सवा लाख अथवा कम से कम २४ दिन तक रात्रि में १०८ बार इसके मंत्र जाप करें तो लक्ष्मी प्राप्त होय, सर्व बाधाओं का निवारण होय।

यंत्र नं. 37

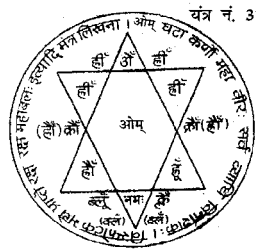

38 द्रव्य प्राप्ति यंत्र

यंत्र नं. 25

४	३	८
९	५	१
२	७	६

विधि : शुभ मुहूर्त में इस यन्त्र को सिन्दूर से दिवाली के दिन बनाएं और पूजा के स्थान पर रखें तो लाभ हो।

39 लक्ष्मी बीसा यंत्र

यंत्र नं. 25

महालक्ष्म्यै	५		नमः
९	श्रीं		६
ॐ	१	४	ह्रीं
	७	८	
३	क्लीं		२

विधि : रवि पुष्य नक्षत्र में इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखें। ६२ दिन तक रोज एक-एक यंत्र लिखें। पीला वस्त्र, पीला आसन एवं पीली माला का प्रयोग करें। पूर्व की ओर मुंह रखें। धूप, दीप, फल, नैवेद्य से उस यंत्र की पूजा करें। "ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः" मंत्र की एक माला प्रतिदिन फेरे। यह क्रम ६२ दिन तक चालू रखें। तत्पश्चात् ६३ वें दिन एक चांदी के पत्र पर यंत्र को खुदवा कर उन ६२ यंत्रों को चांदी के पत्र वाले यंत्र

के नीचे रखकर पूजा करें। फिर ६२ यंत्रों में से एक यंत्र पास में रखें, बाकी यंत्रों को आटे की गोलियों में रखकर नदी में बहा दें। ६२वां यंत्र चांदी या सोने के ताबीज में डालकर गले या दाहिनी भुजा में बांध लें। चांदी वाला यंत्र तिजोरी में रखें तो धन-धान्य, सम्मान, सौभाग्य की वृद्धि हो।

40 घर में अटूट धन की प्राप्ति व शांति रहती है यंत्र

यंत्र नं. 40

१६	११	८	५	३	२
१	१४	१३	९	१०	४
६	७	१२	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	१७	१५
ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	न	मः

विधि : इस यंत्र को रवि पुष्य नक्षत्र में सुवर्ण या चाँदी के पतड़े पर बनावें। अंकों के समान उन भगवान को नमस्कार करें। यंत्र के मंत्र की प्रातःकाल कम से कम पांच माला जपें।

यंत्र नं. 41

41 लक्ष्मी दाता चमत्कारी यंत्र

विधि : यह यंत्र लक्ष्मी दाता चमत्कारी है। रत्रि-पुष्य में सोने चांदी के पत्र या भोजपत्र पर लिखकर हमेशा पूजन करें।

यंत्र नं. 42

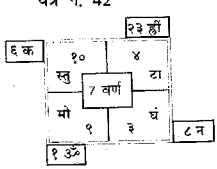

42 घर में लक्ष्मी स्थिर रहे यंत्र

विधि : इस यंत्र को विधि पूर्वक लिखकर घर में रखकर पूजा करे तो लक्ष्मी स्थिर रहे।

43 लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र

विधि : व्यापार तथा लक्ष्मी प्राप्ति के लिए चालू विधि से तैयार करना।

यंत्र नं. 43

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

यंत्र नं. 44

१६	९	४	५
३	६	१५	१०
१३	१२	१	८
२	७	१४	११

44 लक्ष्मी प्राप्ति चौत्तीसा यंत्र

विधि : लक्ष्मी तथा व्यापार वर्द्धक यंत्र को चालू विधि से तैयार करें तो लाभ हो।

यंत्र नं. 45

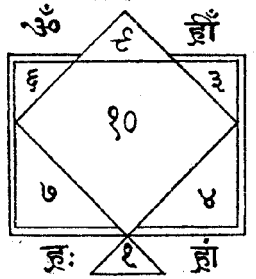

45 लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र

विधि : इस यन्त्र को उत्तम समय देखकर अष्टगंध से या पंचगंध से लिख लें। कलम सोने की या अनार अथवा चमेली की जैसी भी मिल सके लेकर भोजपत्र या कागज पर लिखें और यन्त्र को अपने पास में रखें। हो सके तो इस तरह का यन्त्र तांबे के पत्र पर तैयार कराकर, प्रतिष्ठित करा लें और निज के मकान या दुकान में स्थापना कर नित्य पूजा करें। सुबह-शाम घी का दीपक जलाएं तो लाभ मिलेगा। इष्टदेव के स्मरण को न भूलें।

46 धन प्राप्ति विपत्ति हर यंत्र

मंत्र : ॐ श्रीं क्लीं श्री देव्यै नमः ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

यंत्र नं. 46

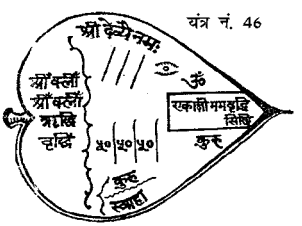

विधि : इस एकाक्षी नारियल पर सोना, चाँदी का वरख लगाना। उस पर यह मंत्र अष्टगंध से लिखें। दिवाली के दिन १,२४,००० जाप करें। १०८ बार गोला से हवन करना। सिद्ध कर इस नारियल को भण्डार की पेटी में रखें द्रव्य की प्राप्ति होय, कोई भी विपत्ति नहीं आती है।

यंत्र नं. 47

१	७	६	२	८	९	९
५	१	७	६	२	७	४
७	६	१	७	६	७	१
४	७	९	१	७	१	१४
१	२	४	५	७	९	१

47 अकस्मात धन प्राप्ति यंत्र

विधि : इस यंत्र को सफेद खणोठी (सफेद गुंजा) के रस में जैतून की कलम से हर मंगल को अन्त की संख्या से लिखें। २१ बार लिखने से सिद्ध होय। पीछे अष्टगंध से लिखकर दाएं हाथ में बांधें, अकस्मात धन लाभ होय। सिद्ध होय।

48 अद्‌भुत लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र

मंत्र : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं नमः महालक्ष्म्यैः धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय ह्रीं श्रीं नमः।

यंत्र नं. 48

ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	महा
अ	र्हं	न	मः	लक्ष्म्यैः
ध	र	णे	न्द्र	पद्मा
स	हि	ता	य	वती
ह्रीं	श्रीं	न	मः	नमः

विधि : इस यंत्र को सोना चांदी या तांबे के पत्रे पर खुदाकर पूजन करें तथा इसके साथ दिये मंत्र का १,२५००० जाप करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

यंत्र नं. 49 ॐ श्रीं लक्ष्मी

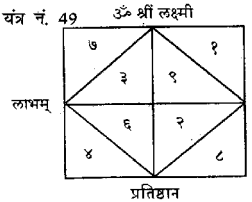

49 लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र

विधि : यह यंत्र अपनी दुकान के दाएं तरफ अष्टगंध से अनार की कलम से बनाएं लाभ होगा।

यंत्र नं. 50

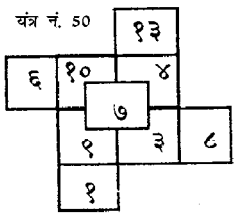

50 सिद्धि दाता लक्ष्मी कवच यंत्र

विधि : इस यंत्र के पूजन दर्शन करने से घर में धनसम्पत्ति ऐश्वर्य एवं सुखों की वृद्धि होती है और लक्ष्मी स्थिर रहती है।

दरिद्रता नाश के लिए : दीपावली की रात्रि में कमलगट्टे या स्फटिक की माला से पूर्व दिशा में मुख करके, दीपक जलाकर निम्न मंत्र की जाप करें – 'ॐ ह्रीं दारिद्रय विनाशने अष्ट लक्ष्मयै ह्रीं नमः' पहले मंत्र का उत्कीलन करें – 'ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।' १०८ बार उच्चारण करें।

यंत्र नं. 51

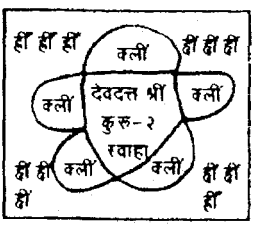

51 निर्धन को धन की प्राप्ति होय यंत्र

विधि : इस यंत्र को अष्टगंध से लिखकर बांधे तो अवश्य ही धन प्राप्त हो। देवदत्त के स्थान पर व्यक्ति का नाम लिखें।

यंत्र नं. 52

३१	३५	३५	३८
३६	२७	३२	३५
४	२०	३४	२९
३३	३०	३६	२८

52 दरिद्रता नाशक यंत्र

विधि : इस यंत्र को विधि पूर्व लिखकर ताबीज में डालकर गले में पहने तो दरिद्रता का नाश हो।

यंत्र नं. 53

६	१	२
७	५	३
२	९	४

53 सर्व सिद्धि दाता यंत्र

विधि : सोमवार के दिन प्रातःकाल शुद्ध होकर कार्य को लक्ष्य लेकर कागज पर जाफा से यंत्र लिखें और धूप दें। फिर उसे सन्दूक में रख दें। इस प्रकार 31 दिन करें तो अच्छी सफलता हो। यदि यंत्र को चाँदी में मढ़वाकर गले में या हाथ में बाँध ले तो उसकी हर समय रक्षा करता रहेगा।

यंत्र नं. 54

४३	५०	२	७
३	६	४७	४६
४९	४४	८	१
४	५	४५	४८

54 ऋद्धि वृद्धि यंत्र

विधि : इस ऋद्धि सिद्धि यंत्र को कुमकुम, गोरोचन, केशर से आंगिया (आम) के पाटे पर लिखकर पूजन करें, ऋद्धि वृद्धि होय।

यंत्र नं. 55

४	९	२
३	५	७
८	१	६

55 श्री रिद्धि-सिद्धि यंत्र

विधि : शुभ मुहूर्त में यंत्र जी को अष्टगंध से भोजपत्र पर बनाये, पुनः प्राण-प्रतिष्ठा करें।

यंत्र नं. 56

९	४	७
५	७	८
६	९	५

56 सर्व सिद्धिदाता बीसा यंत्र

विधि : इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर चमेली की कलम बनाएं। फिर धूप देकर, पूजा करके पास रखें तो संसार के समस्त कामों में सिद्धि मिलती है।

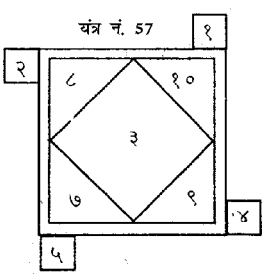

57 शान्तिपुष्टि बीसा यंत्र

विधि : शुभ मुहूर्त में अष्टगन्ध से भोजपत्र पर बनायें, जिसके लिये यंत्र बनाया हो, उसका नाम यंत्र में लिखें, फिर यंत्र पास में रखें तो शान्ति पुष्टि हो।

श्री नवग्रह शांति चालीसा

दोहा - नव देवों के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
अर्चा करते भाव से, पाने भवदधि पार॥
चालीसा नवग्रह का यहाँ, पढ़ते योग सम्हार।
सुख-शांति सौभाग्य पा, करें आत्म उद्धार॥

(चौपाई)

नवग्रह नभ में रहने वाले, सारे जग से रहे निराले॥1॥
रवि शशि मंगल बुध गुरु जानो, शुक्र शनि राहु केतु मानो॥2॥
कर्म असाता उदय में आए, तब ये नवग्रह खूब सताएँ॥3॥
कभी व्याधि लेकर के आते, कभी उदर पीड़ा पहुँचाते॥4॥
आँख कान में दर्द बढ़ाते, मन में बहु बैचेनी लाते॥5॥
कभी होय व्यापार में हानी, कभी करें नौकर मनमानी॥6॥
कभी चोर चोरी को आवें, छापा मार कभी आ जावें॥7॥
कभी कलह घर में बढ़ जावे, कभी देह में रोग सतावे॥8॥
बेटा-बेटी कही न माने, अपने अपना न पहिचाने॥9॥
प्राणी संकट में पड़ जावे, शांति की ना राह दिखावे॥10॥
ऐसे में भी प्रभु की भक्ति, हर कष्टों से देवे मुक्ति॥11॥
ग्रहारिष्ट रवि जिसे सताए, पद्म प्रभू को वह नर ध्याये॥12॥
जिन्हें चन्द्र ग्रह अधिक सताए, चन्द्र प्रभु को भाव से ध्याये॥13॥
मंगल ग्रह भी जिन्हें सताए, वासुपूज्य जिन शांति दिलाएँ॥14॥
ग्रहारिष्ट बुध पीड़ा हारी, अष्ट जिनेन्द्र रहे शुभकारी॥15॥
विमलानन्त धर्म अर पाए, शांति कुन्थु नमि वीर कहाए॥16॥
गुरु अरिष्ट ग्रह शांति प्रदायी, अष्ट जिनेन्द्र रहे सुखदायी॥17॥
ऋषभाजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति सुपार्श्व विमल पद वंदन॥18॥
तीर्थंकर शीतल जिन स्वामी, गुरु ग्रह शांति कारक नामी॥19॥
शुक्र अरिष्ट शांति कर गाए, पुष्पदन्त जिनराज कहाए॥20॥

शनि अरिष्ट ग्रह शांती दाता, श्री मुनिसुव्रत रहे विधाता॥21॥
राहू ग्रह नाशक कहलाए, नेमिनाथ तीर्थंकर गाए॥22॥
मल्लि पार्श्व का ध्यान जो करते, केतू ग्रह की बाधा हरते॥23॥
जो चौबिस तीर्थंकर ध्याए, जीवन में वह शांति उपाए॥24॥
गगन गमन वह करते भाई, मानव को होते दुखदायी॥25॥
जन्म लग्न राशी को पाए, मानव को ग्रह बड़ा बताए॥26॥
ज्ञानी जन उस ग्रह के स्वामी, तीर्थंकर को भजते नामी॥27॥
ग्रह हारी दिन जिन को ध्याएँ, पूजा कर सौभाग्य जगाएँ॥28॥
करें आरती मंगलकारी, विशद भाव से शुभ मनहारी॥29॥
चालीसा चालिस दिन गाए, मंत्र जाप भी करते जाएँ॥30॥
मंगलमयी विधान रचाएँ, शांति भाव से ध्यान लगाएँ॥31॥
अन्तिम श्रुत केवली गाए, भद्रबाहु स्वामी कहलाए॥32॥
नवग्रह शांति स्तोत्र रचाए, चौबीसों जिनवर को ध्याए॥33॥
शान्त्यर्थ शुभ शांतिधारा, भवि जीवों को बने सहारा॥34॥
नौ तीर्थंकर नवग्रह हारी, कहलाए हैं मंगलकारी॥35॥
चन्द्रप्रभु वासुपूज्य बताए, मल्ली वीर सुविधि जिन गाए॥36॥
शीतल मुनिसुव्रत जिन स्वामी, नेमि पार्श्व जिन अन्तर्यामी॥37॥
नवग्रह शांती जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥38॥
'विशद' भावना हम ये भाएँ, सुख-शांती सौभाग्य जगाएँ॥39॥
हमें सहारा दो हे स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी॥40॥

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति से लोग।
रोग-शोक क्लेशादि का, रहे कभी न योग॥
नवग्रह शांती के लिए, ध्याते जिन चौबीस।
सुख-शांती आनन्द हो, 'विशद' झुकाते शीश॥

जाप्य : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा नमः सर्व ग्रहारिष्ट शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।